सामाजिक विचारक

डॉ. मंजु लता छिल्लर

सामाजिक विचारक
डॉ. मंजु लता छिल्लर

पुस्तक के बारे

समाज मानवीय अंतःक्रियाओं के प्रक्रम की एक प्रणाली है। किसी समाज के अंतर्गत आने वाले व्यक्ति एक दूसरे के प्रति परस्पर स्नेह तथा सहृदयता का भाव रखते हैं। समाज की इन गतिविधियों का ज्ञान हमें विभिन्न सामाजिक विचारकों के मतों से प्राप्त होता है। सुकरात, इमाइल, दुर्खीम, कार्लमार्क्स आदि ने पाश्चात्य देशों के सामाजिक अध्ययन से विश्व को अवगत कराया है। भारतीय सामाजिक विचारकों की श्रेणी में बाल गंगाधर तिलक, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, गोविंद सदाशिव घुरिए आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक में विश्व के कुछ प्रमुख सामाजिक विचारकों की जीवनगाथा को प्रस्तुत किया गया है।

लेखक परिचय

लेखक : डॉ. मंजु लता छिल्लर

जन्म : मार्च 1975, मुम्बई

शिक्षा : एम.ए. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर से 1997 में प्रथम श्रेणी एवं स्थान से उत्तीर्ण; पी.एच.डी. सन् 2000 में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से; डी.लिट् 2008 में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से; विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा समर्थित दलित महिलाओं पर एक प्रोजेक्ट पूर्ण, बाल-श्रम समस्याओं पर एक विस्तृत प्रोजेक्ट पूर्ण एवं ग्रामीण विकास में संचार साधनों की भूमिका विषय पर विस्तृत प्रोजेक्ट पर कार्यरत; अनेक लेख विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित, कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता तथा पत्र वाचन।

प्रकाशित ग्रन्थ : अनुसूचित जाति में महिला उत्पीड़न, भारतीय सामाजिक समस्याएं, जनसंचार माध्यम और महिलाएं, भारतीय नारी : शोषण के बदलते आयाम, भारतीय समाज में महिला उत्पीड़न, ग्रामीण समाजशास्त्र, सामाजिक अनुसंधान एवं पद्धतियां, भारत में बालश्रम : समस्याएं एवं समाधान, भारतीय समाज एवं राजनैतिक व्यवस्था।

सम्प्रति : एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पी.जी. कॉलेज मेरठ (यू.पी.)

₹ 995/-

ISBN-978-81-88791-64-4

राहुल पब्लिशिंग हाऊस
348/6, शास्त्री नगर, मेरठ (यू.पी.)-250 005
फोन : 09897060554

पुस्तक के बारे

भारत प्राचीन काल से ही अपनी सभ्यता व संस्कृति के लिए जाना जाता रहा है। भारतीय समाज की यदि विश्व के अन्य देशों के समाज से तुलना की जाए तो पता चलता है कि यहां का समाज काफी अलग है। विभिन्न युगों में यहां शक, हूण और कुषाण आदि अपनी पृथक् व्यवस्था को लेकर आये। उनकी व्यवस्था के साथ भारत की व्यवस्था की अन्तःक्रिया हुई। इसके बाद मुगल आये। उनकी सभ्यता और संस्कृति ने भारतीय समाज को प्रभावित किया। हमने उनसे बहुत कुछ सीखा और उन्होंने भी हमसे बहुत कुछ लिया। दोनों वर्गों की सामाजिक व्यवस्था में काफी बदलाव हुए। मुगलों के बाद भारत में अंग्रेजों का पदार्पण हुआ जिसके साथ ही भारत ने आधुनिक युग में कदम रखा। इतिहास के इस लम्बे दौर ने यहां की सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को एक नई पहचान दी।

लेखक परिचय

लेखक : डॉ. मंजु लता छिल्लर

जन्म : मार्च 1975, मुम्बई

शिक्षा : एम.ए. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर से 1997 में प्रथम श्रेणी एवं स्थान में उत्तीर्ण; पी.एच.डी. सन् 2000 में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से; डी.लिट् 2008 में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा समर्पित दलित महिलाओं पर एक प्रोजेक्ट पूर्ण, बाल-श्रम समस्याओं पर एक विस्तृत प्रोजेक्ट पूर्ण एवं ग्रामीण विकास में संचार साधनों की भूमिका विषय पर विस्तृत प्रोजेक्ट पर कार्यरत, अनेक लेख विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित, कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता तथा पत्र वाचन।

प्रकाशित ग्रन्थ : अनुसूचित जाति में महिला उत्पीड़न, भारतीय सामाजिक समस्याएं, जनसंचार माध्यम और महिलाएं, भारतीय नारी : शोषण के बदलते आयाम, भारतीय समाज में महिला उत्पीड़न, ग्रामीण समाजशास्त्र, सामाजिक अनुसंधान एवं पद्धतियां, भारत में बालश्रम : समस्याएं एवं समाधान, भारतीय समाज एवं राजनीतिक व्यवस्था।

सम्प्रति : एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पी.जी. कॉलेज मेरठ (यू.पी.)

₹ 995/-

ISBN-978-81-88791-62-0

राहुल पब्लिशिंग हाउस
348/6, शास्त्री नगर, मेरठ (यू.पी.)-250 005
फोन : 09897060534

भारतीय समाज

डॉ. मंजु लता छिल्लर

RP

भारतीय समाज

डॉ. मंजु लता छिल्लर

ग्रामीण समाजशास्त्र

डॉ. मंजु लता छिल्लर

ग्रामीण समाजशास्त्र डॉ. मंजु लता छिल्लर

RPH

पुस्तक के बारे

ग्रामीण समाजशास्त्र का स्वरूप काफी विस्तृत है। इसके अध्ययन क्षेत्र में कई विषय शामिल हैं। ग्रामीण समाजशास्त्र विषय के अन्तर्गत देश के ग्रामीण समाज एवं जनजीवन का अध्ययन प्रमुख रूप से किया जाता है। इसमें गाँव, समाज या देश की आधारभूत ईकाई के रूप में इसके संरचनात्मक स्वरूप का अध्ययन, विश्लेषण शामिल है। ग्रामीण समाजशास्त्र में गाँव के सामाजिक संबंधों, संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन सम्मिलित है। गाँव दुनिया के तमाम देशों, समाजों में औद्योगीकरण से पहले सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था की मूलभूत इकाई रहे हैं। इसलिए सभी देशों के समाजशास्त्र में इस विषय का अध्ययन किया जाता है।

लेखक परिचय

लेखक : डॉ. मंजु लता छिल्लर

जन्म : मार्च 1975, मुम्बई

शिक्षा : एम.ए. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर से 1997 में प्रथम श्रेणी एवं स्थान में उत्तीर्ण; पी.एच.डी. सन् 2000 में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से; डी.लिट् 2008 में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से; विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सम्पोषित दलित महिलाओं पर एक प्रोजेक्ट पूर्ण, बाल श्रम समस्याओं पर एक विस्तृत प्रोजेक्ट पूर्ण एवं ग्रामीण विकास में संचार साधनों की भूमिका विषय पर विस्तृत प्रोजेक्ट पर कार्यरत; अनेक लेख विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित, कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता तथा पत्र वाचन।

प्रकाशित ग्रन्थ : अनुसूचित जाति में महिला उत्पीड़न, भारतीय सामाजिक समस्याएं, जनसंचार माध्यम और महिलाएं, भारतीय नारी : जीवन के बदलते आयाम, भारतीय समाज में महिला उत्पीड़न, ग्रामीण समाजशास्त्र, सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, भारत में नगरीकरण : समस्याएं एवं समाधान, भारतीय समाज एवं राजनीतिक व्यवस्था।

सम्प्रति : एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पी.जी. कॉलेज मेरठ (यू.पी.)

₹ 950/-

ISBN-978-81-88791-63-7

राहुल पब्लिशिंग हाऊस
348/6, शास्त्री नगर, मेरठ (यू.पी.)-250 005
फोन : 09897060534

ISBN 978-81-910666-8-5

International Terrorism, Tourism and Economic Health of the World

Edited By:
Dr. A.K. Misra
Dr. Anurag Agarwal

Editorial Office :
Post Graduate Department of Commerce and Research Studies
Swami Shukdevanand (PG) College
Mumukshu Ashram, Shahjahanpur (U.P.) – 242226 India
Tel : 09415725333, 08299108532
E-mail :aagarwal160@gmail.com

Copyright © 2017 by the Editors

This book, or any part thereof must not be reproduced or reprinted in any form, whatsoever, without the written permission of the publisher, except for the purpose of references and review.

First Published 2017

ISBN: 978-81-910666-8-5

Published by:MumukshuPublication of Humanities, Department of Commerce,
S.S. (PG) College, Shahjahanpur (U.P.)
Printed at Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla Industrial Area Phase-I, New Delhi-110020
Email :rakmopress56@gmail.com

Produced and Bounded in India

ENGLISH SECTION

UNIT 4: IMPACT OF TERRORISM ON CULTURE, SCIENCE, SPORTS AND HUMANITIES

70. Human Rights And Terrorism :An Indian Perspective
Shashi Prabha 433

71. Terrorism : An Irrational Annihilation of Humanity
Dr. Shahzad Ahmad 440

72. Realistic Delineation of the Horrors of Terrorism in John Hoyer Updike's Varieties of Religious Experience and Terrorist
Dr. Reefaqat Husain 447

73. The splendid artistic legacy of Angkor Wat
Dr. Archana Rani 451

74. Assessment of Organic Food and its Growth and Influence in Hospitality Industry 457
Dr. Khushboo Sharma, Anjali Maheshwari

75. Impact of Terrorism on Mental Health
Geet Chawla 463

75. Terrorism Curse for Amelioration of Nation
Gautam Singh 467

76. To study the Impact of turmoil ontourism sector of Kashmir
Mohmmad Idrees, Dr. M.D. Somani 471

77. Impact of Cyber Terrorism on World
Dr. Mohd. Haneef, Gaurav Singh Baghel 477

78. Terrorism & It's Effect on Mental Health
Dr. Sarika Sharma 488

79. Impact of Tourism on Culture of India
Dr. S. P. Yadav, Dr. A. K. Srivastava 493

80. Terrorism Risk & Its Impact on Tourism
Mr. Abhishek Sharma 498

81. Employee Personality: The Key to Better Job Performance
(A review of personality and performance)
Ravindra Kumar, Dr. B. K. Agarwal 503

82. Dependence of Pc4 Occurrence on Kp values at Low Latitudes in India
M.T. Khan, M.A. Khan and R. Ali 509

The splendid artistic legacy of Angkor Wat

Dr. Archana Rani*

Abstract-

Each country in the world has contributed to the world's cultural heritage. One of the most contributing parts of the world to cultural heritage is East Asia. Architectural, religious, musical, visual, and literary forms of art practiced by East Asian people had been greatly influenced by religious traditions practiced in the region—in particular, Hinduism and Buddhism. One of the most outstanding monuments ever created under the influence of these two paradigms was the temple complex of Angkor Wat in Cambodia.

Angkor Wat (Cambodia) combines two basic plans of Khmer temple architecture: the temple mountain and the later galleried temple, based on early South Indian Hindu architecture, with key features such as the Jagati. It is designed to represent Mount Meru, home of the devas in Hindu mythology: within a moat and an outer wall 3.6 kilometres (2.2 mi) long are three rectangular galleries, each raised above the next. The temples that are now the highlight of a visit to Angkor – Angkor Wat and those in and around the walled city of Angkor Thom – were built during the classical period. The reign of Suryavarman II and the construction of Angkor Wat signifies one of the high-water marks of Khmer civilisation. Many of the great temples at Angkor all of which gave expression to Indian cosmological and mythical themes, were built in order to provide a focus for cults through which kings and other members of the royal family could be assured of immortality by becoming identified with Siva or one of the other preeminent gods of the realm.

Key Words- Angkor Wat, Architecture, Sculptures, Motifs, Mythical theme, Shiva and Vishnu, Ornamentation.

Introduction

Angkor Wat is the world's largest religious building, it is the only one to have remained a significant religious centre since its foundation – first Hindu, dedicated to the god Vishnu, then Buddhist. It has become a symbol of Cambodia, appearing on its national flag, and it is the country's prime attraction for visitors.

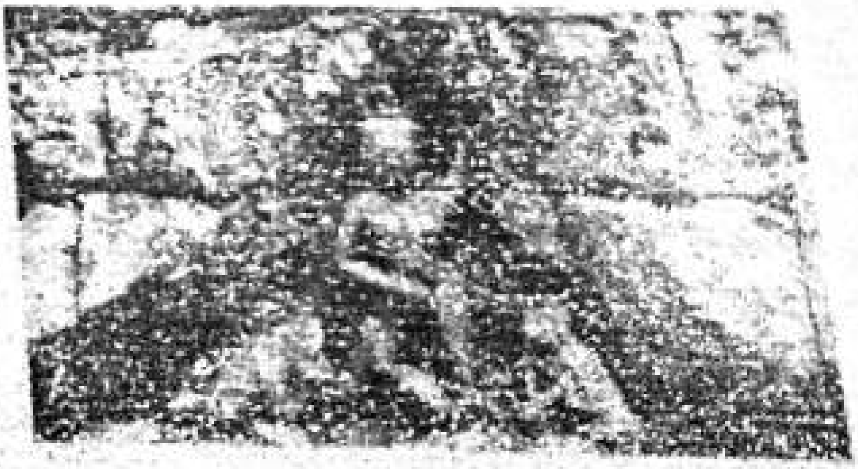

*Head Drawing & Painting Department R.G. College, [illegible] INDIA [illegible]
[illegible]@gmail.com

GENDER INEQUALITY IN INDIAN CONTEMPORARY ART

भारतीय समकालीन कला में लैंगिक असमानता

Editor
Dr. Vandana Verma

Corresponding Editor
Dr. Nisha Gupta

ISBN 978-81-933474-0-9
मूल्य - 1800/-
© - आनन्द चतुर्वेदी - 2016
प्रथम संस्करण

इस सम्पादित पुस्तक में प्रकाशित शोध–पत्रों, लेखों में व्यक्त विचार
एवं तथ्य स्वयं लेखकों के हैं, उसमें प्रकाशक या सम्पादिका का
सहमत होना आवश्यक नहीं है और उसके लिये
प्रकाशक या सम्पादिका किसी भी
रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

मुद्रक व प्रकाशक

cps

COMPLETE PRINTING SOLUTIONS
Regd. Office : 171, Naya Bans Nadi Road, Muzaffarnagar U.P.
works : 106/67, Near New gaushala, Nadi Road, Muzaffarnagar U.P.

ISBN : 978-81-933474-0-9

J.K.P. (PG) College, Meerut Road, Muzaffarnagar, U.P.
www.jkppgcollege.org

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	भारतीय समकालीन चित्रकला के क्षेत्र मे लैगिग असमानता	अनिता यादव	8–10
2.	लैगिक असमानता एवं नारी चित्रकारों द्वारा कला–कर्म	डॉ. अर्चना शर्मा	11–15
3.	भारतीय समकालीन : "स्त्री–पुरुष, कलाकार बनाम लिंग–भेद"	डा० अमृत लाल	16–17
4.	आधुनिक भारतीय कला मे महिला कलाकारों के बढ़ते कदम	डॉ० अंजू चौधरी	18–21
5.	भारतीय समकालीन चित्रकला के क्षेत्र में लैगिग भेदभाव	श्रीमती अन्जू तेवतिया	22–24
6.	भारतीय समकालीन कला में लैगिक असमानता	श्री अरविन्द कुमार	25–28
7.	भारतीय समकालीन चित्रकला मे लैंगिक असमानता	गगन कुमार	29–30
8.	भारतीय समकालीन चित्रकला के क्षेत्र में लैगिक असमानता	कु० कविता	31–35
9.	समाज द्वारा लिंग भेदभाव पूर्ण व्यवहार	डा० मन्जू गर्ग	36–40
10.	भारतीय महिला चित्रकार	डॉ0 महेश कुमार	41–42
11.	मुस्लिम समाज मे लैगिक असमानता	मेघा फातिमा	43–44
12.	समाज में लैगिक असमानता	मेघा त्यागी	45–46
13.	भारत में लैगिक असमानता, समस्याओं और परिप्रेक्ष्य	मीना श्री सुरेश पाल सिंह	47–48
14.	भारतीय समकालीन चित्रकला के क्षेत्र में लैगिक असमानता	मातृमणी	49–50
15	समाज में महिला एवं पुरुष में भेदभाव	मनोज कुमार तेज सिंह	51–52
16.	Gender Inequality in Modern India- Scenario and Solutions	Moolchand Singh	53–54
17	समाज में महिला एवं पुरुष मे भेदभाव	श्री मनोज कुमार पुत्र रतिराम	55–56
18.	समकालीन भारतीय चित्रकला में लैगिक असमानता	निधि सिंह	57
19.	Gender Inequality in the field of Indian Contemporary Art	Nikita Jain	58–59
20.	Gender Inequality as economic, Cultural and		

 ISBN : 978-81-933474-0-9

लैंगिक असमानता एवं नारी चित्रकारों द्वारा कला-कर्म

✍ डॉ. अर्चना रानी
विभागाध्यक्ष: चित्रकला विभाग,
आर.जी. (पी.जी.) कॉलिज, मेरठ, उ0प्र0, भारत।
फोन नं. – 0121–4050917

प्रकृति एवं मानव सदैव एक दूसरे के पूरक रहे है। परिवर्तन एवं मानव व्यवहार भी सदैव से ही सम्बद्ध रहे हैं। अपनी चेतन प्रवृत्ति की वजह से मानव सामाजिक स्वरूप एवं सरोकरो में अपनी विशेष भूमिका आज भी बनाए हुए है। मानव सदैव से ही अपनी प्राचीन परम्पराओ को छोड़ने अथवा बदलने अथवा परिवर्तन स्वरूप में उसे स्वीकार्य करने में अत्यंत गम्भीर रहा है। आज के बदलते वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में विश्व के अन्य देशों की तरह भारतीय समाज में भी लैंगिक समानता एक क्रांतिकारी मुद्दे के रूप में विद्यमान है। लैंगिक समानता के सदप्रयासो के चलते महिला सशक्तिकरण की अवधारणा का नारा राजनैतिक दलो को अत्यंत प्रिय है। समाज के प्रबुद्ध वर्ग के विशिष्ट व्यक्ति भी महिला सशक्तिकरण के पक्षधर है। भारत जैसे बहुभाषी, बहुवाणी, बहुजातीय एव बहुभौगोलिक परिवेश मे महिला एवं पुरूष के सभी अधिकार सामाजिक परम्परा के रूप मे विभक्त हैं।

ऐसे समाज में महिलाओ को एक दायरे मे रहकर ही अपनी स्वतन्त्रता का उपयोग करना है। महिलाओं ने अपनी प्रतिभा व रूचि के अनुरूप ऐसे कार्यों को चुनना प्रारम्भ किया जिसमें समाज के साथ–साथ परिवार के सदस्यो को न कोई आपत्ति न हो। कुछ महिलाओं ने लोककला को एक व्यवसाय के रूप मैं चुना। उन्होंने लोककला के विभिन्न प्रतीकों, फूल–पत्तियो, विभिन्न आकृतियो को व्यवसाय के मुख्य प्रयोग कर अपनी दक्षता प्रदर्शित की। कला एक ऐसा विषय है जिसके माध्यम से एक कलाकार समाज से सीधा जुड़ा रहता है तथा अपनी कलाकृतियों के माध्यम से समाज मे फैली कुरीतियों व कुप्रथाओं पर सीधा वार कर उनसे जनता को अवगत करा सकता है। समाज मे हमेशा से ही महिलाओ पर अत्याचार होते आये हैं। अतः एक महिला ही दूसरी महिला का दुख अच्छी प्रकार समझ सकती है साथ ही उसे व्यक्त भी कर सकती है। उसे इसकी अभिव्यक्ति के लिये कला से अच्छा और कोई माध्यम मिल ही नहीं सकता। कला एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कलाकार अपने मन में आये विभिन्न विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है। इस प्रकार सामाजिक व अन्य परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारत मे अनेक महिला कलाकार उभर कर आयी जिन्होंने न केवल कला को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया अपितु समाज में एक सम्मान जनक स्थान भी प्राप्त किया। अमृता शेरगिल, अर्पिता सिंह, मणालिनी मुखर्जी, गोगी सरोज पाल, जया अप्पासामी, देवयानी कृष्ण, अर्पणा कौर, वी.प्रभा आदि कुछ ऐसे ही नाम है जिन्होंने कला के क्षेत्र में नवीन ऊँचाइयों को छूते हुए नारी शोषण व अत्याचार आदि के माध्यम से समाज को अवगत कराने का भरसक प्रयास किया है।

हमारा भारतीय समाज ऐसी संकीर्णताओ एवं मान्यताओ से घिरा है जहाँ की रूढ़िवादी विचारधारा में महिलाओ को केवल घर तक ही सीमित माना जाता रहा है। अगर हम प्राचीन समय की बात करें जब आज की तरह महिलाओं के साथ छेड़खानी, बदतमीजी आदि घटनाएँ नहीं होती थी तब भी महिलाओं को कोई स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं थी। उन्हे न तो लड़कों के साथ पढ़ने की अनुमति थी न ही ऐसे विद्यालयों में जाने की अनुमति थी जहाँ पढ़ाने वाले गुरूजन पुरुष होते थे। प्राचीन समय मे वैदिक एवं बौद्धकाल मे गुरूकुल व आश्रम पद्धति पर आधारित शिक्षा संस्थान थे तथा छा.त्र गुरुओं की छत्रछाया में वहीं रहकर गुरूओं की सेवा करते हुए शिक्षा ग्रहण करते थे, मगर उस समय महिला शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। नारी शिक्षा के विषयों में अनेक मत प्रचलित रहे हैं। पुरुष का अहंभाव नारी एवं शिक्षा के प्रति पूर्वाग्रहित रहा है। बौद्ध काल मे स्त्रियो की स्थिति में कोई विशेष अन्तर नहीं आया। इस युग में भी स्त्रियो का स्थान पुरूषों से नीचा ही था। इससे पहले संघ मे स्त्रियों का जाना वर्जित था। परन्तु बाद मे उन्हे संघ में जाने की आज्ञा मिली

2017-18

Natural Resource Management for Sustainable Agriculture

Dr. Jogindar Singh

Self Attested
20/09/21

Published By :
ANU BOOKS
E-mail : anubooks123@gmail.com
Website : www.anubooks.com
Phone : 0121-2657362
Mob. : 91-9997847837

Year - 2016

₹ 450 /-

EDITOR

Dr. Joginder Singh

Assistant Professor, Department of Horticulture

Janta Vedic College, Baraut, Baghpat, U.P

CO-EDITORS

Dr. Rashmi Nigam

Assistant Professor, Department of Horticulture

Janta Vedic College, Baraut, Baghpat, U. P.

Dr. Anant Kumar

Assistant Professor, Horticulture

K. V. K., Muradnagar, Ghaziabad, U. P.

Dr. Rajendra Singh

Associate Professor, Department of Entomology

S. V. P. U. A. & T. Modipuram, Meerut, U. P.

Sh. Ashwani Kumar

Associate Professor, Department Ag. Extension

C.C.S.S. (PG) College, Machhara, Meerut, U. P.

Dr. A. K. Sharma

Assistant Professor, Department of Horticulture

Janta Vedic College, Baraut, Baghpat, U.P

23 Effect of Chemical Fertilizers on Growth and Yield of Okra 158-162

Anirudh Kr.Sharma, Rashmi Nigam And Joginder Singh

24 Study Of Physico-Chemical Status of Freshwater Canal In (U.P.) 163-169

IndiaMadhu, Neera Singh and Archana Arya

25 Traditional Sources Oof Antidotes From Botanicals Sold By Herbal Vendors In North Maharashtra, (India) 170-173

Y.A. Ahirrao, M.V. Patiland D.A. Patil

26 Effect of Humidity and Ascorbic Acid On Oil Seed Under Different Storage Regimes 174-176

Dheeraj Kumar,Geeta Rani, Shalu Sharma, R.K. Sharma and Laxman Singh Gautam

27 Exploring Gladiolus For Color Revolution In India 177-187

Manoj Nazir

28 Assessment Genetic Diversity In Crop Plants Using Molecular Markers: A Review 188-203

Munnesh Kumar, Kuldeep Chandrawat, Kapil Nagar and Bharat Bhushan

29 Wind Energy A Source of Clean Energy: Future In India 204-209

Manika Barar And Kaviraj

30 Soil Erosion, Soil and Water Conversation 210-215

Archana Sharma

31 The Contribution of Livestock In Sustainable Agricultural Systems 216-223

Om Prakash

32 Analysis of Automobile Pollution of Different Roadside Soils In Meerut City, U.P. India 224-231

Shiv Kumari and Ila Prakash

33 Chitosan-Cellulose Hydrogel Beads As Adsorbent For Dyes 232-241

Anuja Agarwal and Vaishali

34 Environment Pollution Control & Management 242-250

Shweta Tyagi

Environment Pollution Control and Management

Shweta Tyagi
Deptt. of Home Science, R.G.P.G.College, Meerut

Introduction

Over the course of the twentieth century, growing recognition of the environmental and public health impacts associated with anthropogenic activities (discussed in the chapter Environmental Health Hazards) has prompted the development and application of methods and technologies to reduce the effects of pollution. In this context, governments have adopted regulatory and other policy measures (discussed in the chapter Environmental Policy) to minimize negative effects and ensure that environmental quality standards are achieved.

The objective of this chapter is to provide an orientation to the methods that are applied to control and prevent environmental pollution. The basic principles followed for eliminating negative impacts on the quality of water, air or land will be introduced; the shifting emphasis from control to prevention will be considered; and the limitations of building solutions for individual environmental media will be examined. It is not enough, for example, to protect air by removing trace metals from a flue gas only to transfer these contaminants to land through improper solid waste management practices. Integrated multimedia solutions are required.

The Pollution Control Approach

The environmental consequences of rapid industrialization have resulted in countless incidents of land, air and water resources sites being contaminated with toxic materials and other pollutants, threatening humans and ecosystems with serious health risks. More extensive and intensive use of materials and energy has created cumulative pressures on the quality of local, regional and global ecosystems.

Before there was a concerted effort to restrict the impact of pollution, environmental management extended little beyond laissez-faire tolerance, tempered by disposal of wastes to avoid disruptive local nuisance conceived of in a short-term perspective. The need for remediation was recognized, by exception, in instances where damage was determined to be unacceptable. As the pace of industrial activity intensified and the understanding of cumulative effects grew, a pollution control paradigm

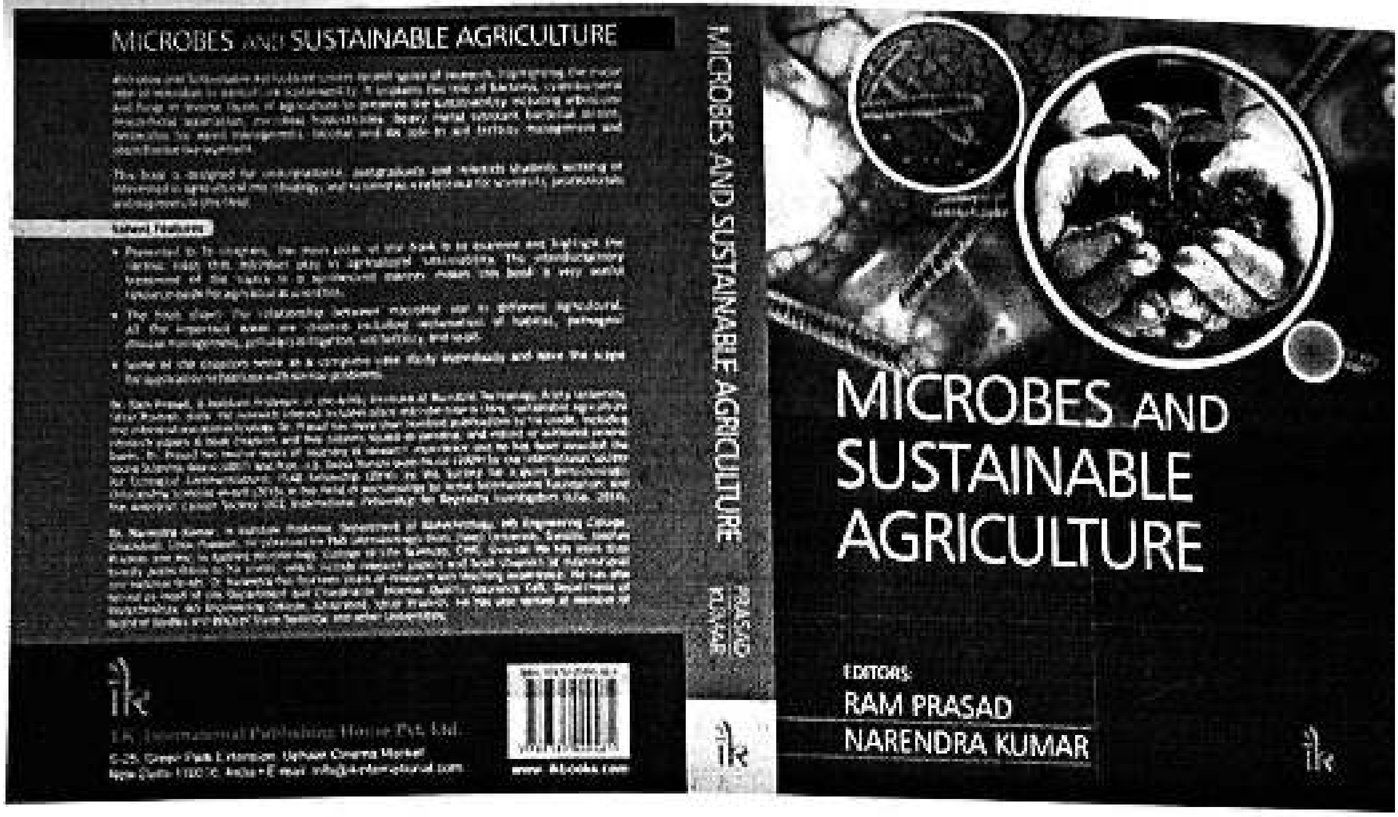

Contents

Preface v

1. Arbuscular Mycorrhizal Association Improves Secondary Metabolite Production in Medicinal and Aromatic Plants: A Sustainable Approach
   Bhawna Saxena and Bhoopander Giri 1
2. Microbial Biopesticides with a Focus on *Bacillus thuringiensis* and Baculoviruses
   Arun Kumar Sharma and Vinay Sharma 32
3. Rhizobacterial Efficacy for Sustainable Crop Productivity in Agroecosystems
   Manoj Kaushal 50
4. Heavy Metal Resistance Bacterial Strains from Agricultural Polluted Sites of Northern India
   Tanveer Bilal, Navreet Kaur, Bisma Malik, Riaz Ul Rehman and Manoj Kumar 62
5. Microbial Metagenomics: Herbicides for Weed Management in Sustainable Agriculture
   Priyanku Teotia, Manoj Kumar and Vivek Kumar 76
6. Biodegradation of Petroleum Hydrocarbon Pollutants in Marine Environment
   Sunita J. Varjani 89
7. Biochar and Its Role in Soil Fertility Management
   Charu Gupta, Dhan Prakash and Shiv Gupta 100
8. Resource - Conserving Agriculture and Role of Microbes
   A.A. Haleem Khan, Naseem and B. Vidya Vardhini 119
9. Secondary Metabolites: A Gift of Natural Weapon for Defense Mechanism in Plants
   Rajesh Kumar Pandey and Ram Prasad 133

7

Biochar and Its Role in Soil Fertility Management

CHARU GUPTA[1*], DHAN PRAKASH[1] AND SNEH GUPTA[2]
[1]Amity Institute for Herbal Research & Studies
Amity University, UP, Sector-125, Noida-201313, India
[2]Department of Zoology, RG (PG) College, Meerut (UP)-250001, India
*Corresponding author Email: *charumicro@gmail.com*

1. INTRODUCTION

Biochar first came into broad public awareness through the example of the Amazon, where the hypothesis is that Amazonian inhabitants added biochar along with other organic and household wastes over centuries to modify the surface soil horizon into a highly productive and fertile soil called Terra Preta, which is in direct contrast to the typical weathered Oxisol soils in close proximity. Biochar is exciting to many people because of its role in such soil-building processes (Wilson, 2014). Biochar is a solid material obtained from the carbonisation of biomass. Biochar may be added to soils with the intention to improve soil functions and to reduce emissions from biomass that would otherwise naturally degrade to greenhouse gases. Biochar also has appreciable carbon sequestration value.

Biochar is a stable carbon (C) compound created when biomass (feedstock) is heated to temperatures between 300 and 1000°C, under low (preferably zero) oxygen concentrations. Biochar, due to its aromatic structure and long mean residence time in soil (more than 100 years) has the potential for long-term carbon sequestration in the soil. Biochar can be produced from a variety of biomass feed stocks, but is generally designated as biochar only if it produces a useable co-product for soil improvement. The efficiency and effectiveness of the process of its creation and use can vary and the specific biomass sources used can affect the characterization and stability of the biochar. In a research, application of biochar with inorganic fertilizers and biofertilizer increased the soil fertility of maize in Alfisols (Gokila and Baskar, 2015).

Biochar is generally produced through thermal conversion (pyrolysis). As agricultural waste and wood is made up of cellulose, hemicelluloses and lignin; these building units are produced into volatile products through the thermal conversion process. Thus, biochar (black charred carbon) is a product of thermal decomposition of biomass (pyrolysis).

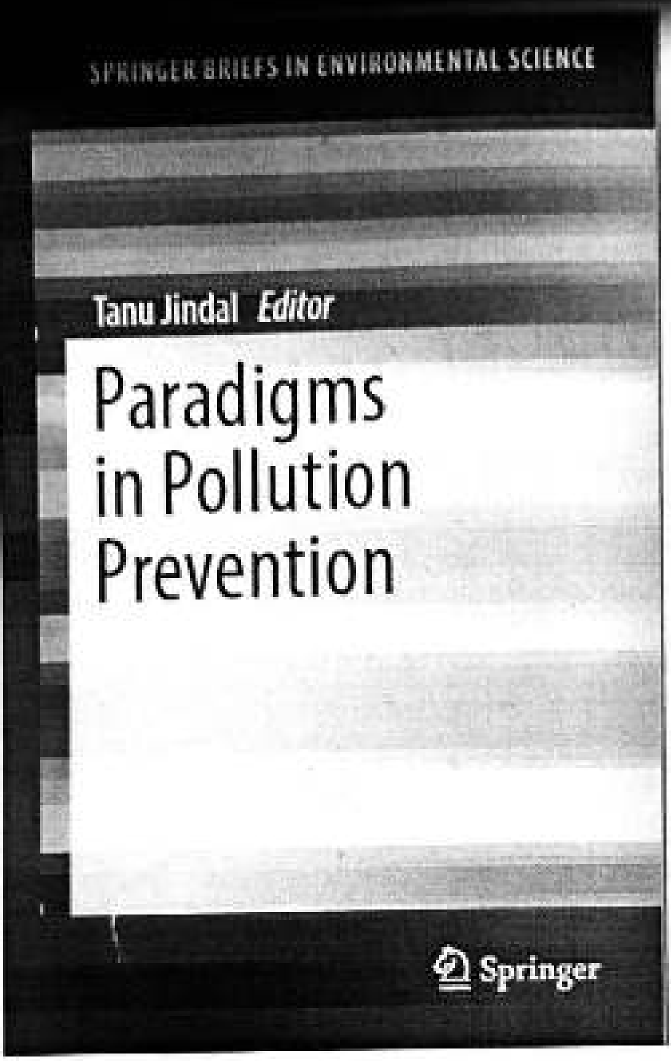

Editor
Tanu Jindal
Amity Institute of Environmental Toxicology
Safety and Management (AIETSM)
Amity University
Noida, UP, India

ISSN 2191-5547 ISSN 2191-5555 (electronic)
SpringerBriefs in Environmental Science
ISBN 978-3-319-58414-0 ISBN 978-3-319-58415-7 (eBook)
DOI 10.1007/978-3-319-58415-7

Library of Congress Control Number: 2017944135

© The Author(s) 2018
This work is subject to copyright. All rights are reserved by the Publisher, whether the whole or part of the material is concerned, specifically the rights of translation, reprinting, reuse of illustrations, recitation, broadcasting, reproduction on microfilms or in any other physical way, and transmission or information storage and retrieval, electronic adaptation, computer software, or by similar or dissimilar methodology now known or hereafter developed.
The use of general descriptive names, registered names, trademarks, service marks, etc. in this publication does not imply, even in the absence of a specific statement, that such names are exempt from the relevant protective laws and regulations and therefore free for general use.
The publisher, the authors and the editors are safe to assume that the advice and information in this book are believed to be true and accurate at the date of publication. Neither the publisher nor the authors or the editors give a warranty, express or implied, with respect to the material contained herein or for any errors or omissions that may have been made. The publisher remains neutral with regard to jurisdictional claims in published maps and institutional affiliations.

Printed on acid-free paper

This Springer imprint is published by Springer Nature

Contents

1 **Green Building, Energy Efficiency, Carbon and Ecological Footprinting (CF and EF), and Life Style Solutions (LSS)** 1
J.S. Pandey and Vaibhav Pandey

2 **Microbes: "A Tribute" to Clean Environment** 17
Charu Gupta, Dhan Prakash, and Sneh Gupta

3 **Food Industry Waste: A Panacea or Pollution Hazard?** 35
Renu Khedkar and Karuna Singh

4 **Ranking of BTEX with Respect to Ozone Formation by Development of Ozone Reactivity Scale** 49
Pallavi Saxena and Chirashree Ghosh

5 **Global Dimming and Global Warming: Dangerous Alliance** 61
Monika Thakur

6 **Biological Control Agents for Sustainable Agriculture, Safe Water and Soil Health** 71
Abhishek Chauhan, Anuj Ranjan, and Tanu Jindal

7 **Environmental Toxicological Studies with Reference to Increasing Asthma Cases in Rural and Urban India** 85
Khushbu Gulati, Shalini Thakur, and Tanu Jindal

Index 97

Chapter 2
Microbes: "A Tribute" to Clean Environment

Charu Gupta, Dhan Prakash, and Sneh Gupta

Abstract Due to industrial development, the amount and variety of hazardous substances added to the environment has increased drastically. Bioremediation is the process of using microorganisms or other life forms to consume and breakdown environmental pollutants in comparatively safe products. Because bacteria have a fast rate of population growth and are constantly evolving, they can adapt to live off materials and chemicals that are normally poisonous to other species. Some bacteria can remove chlorine from carcinogenic materials, digest pesticides, and have the ability to decolorize various xenobiotic dyes through microbial metabolism. Other microbes used for biological decolorization are red yeasts like *Rhodotorula rubra*, *Cyathus bulleri*, *Cunninghamella elegans*, and *Phanerochaete chrysosporium*, *Actinobacteria*, *Cyanobacteria*, *Flavobacteria*, *Deinococcus-thermus*, *Thermotogae*, *Firmicutes*, *Staphylococcus*, and *Proteobacteria*. Construction of strains with broad spectrum of catabolic potential with heavy metal-resistant traits makes them ideal for bioremediation of polluted environments in both aquatic and terrestrial ecosystems. The transfer of genetic traits from one organism to another paves way in creating Genetically Engineered Microorganisms (GEMs) for combating pollution in extreme environments making it a boon to mankind by cleaning up the mess that has created in nature.

Keywords Pollution • Nano-bioremediation • Clean environment • Designer microbes • Microbial cleaners

1 Introduction

Over the last 150 years, the number of organic chemicals released into the environment has increased dramatically (Schwarzenbach et al. 2010) leaving an unprecedented chemical footprint on earth. Many groundwater contaminations result from

---

C. Gupta (✉) • D. Prakash
AIHRS, Amity University, Noida, Uttar Pradesh, India
e-mail: cgupta@amity.edu

S. Gupta
RGPG college, Meerut, India

© The Author(s) 2018
T. Jindal (ed.), *Paradigms in Pollution Prevention*, SpringerBriefs in Environmental Science, DOI 10.1007/978-3-319-58415-7_2

केंद्रीय हिंदी निदेशालय (भारत सरकार) द्वारा पुस्तकालय एवं विद्यालयों के लिए स्वीकृत
जुलाई - सितंबर 2017
ISSN : 2394-644X

प्रकृति मंथन

...ताकि धरती रहे सुहागिन!

पंचतत्व और ब्रह्म की वैज्ञानिक व्याख्या

-डॉ. संजीव कुमार गोयल

With YOGA & NATUROPATHY DIRECTORY

प्रकृति के अमूल्य उपहार

-डॉ. स्वर्णलता कदम

ISBN : 978-93-81250-94-1
₹50

संपादक
मुकेश नादान

त्रैमासिक
प्रकृति मंथन
...ताकि धरती रहे सुरक्षित।

वर्ष 5 : अंक 3 जुलाई-सितंबर 2017 ₹ 50

कहाँ क्या है?

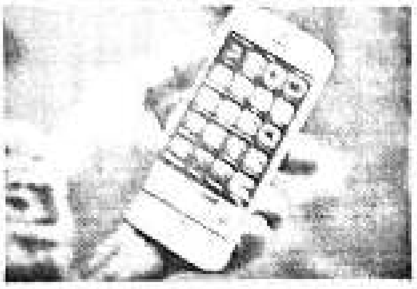

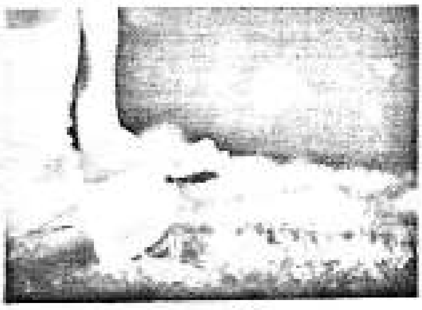

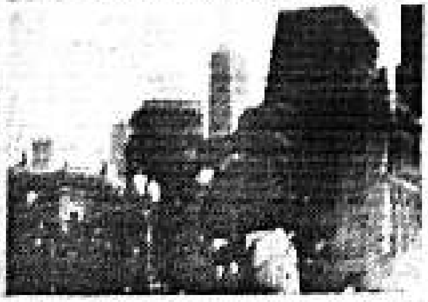

संपादक की कलम से 4
प्रकृति के अमूल्य उपहार/डॉ॰ स्वर्णलता कदम 5
इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडिएशन से सावधान/मुकेश नादान 7
मोबाइल फोन : खतरे की घंटी/ देवेन्द्र सिंह 9
सबसे जरूरी है नाश्ता/डॉ॰ संजीव कुमार गुप्ता 12
पंचतत्व और ब्रह्म की वैज्ञानिक व्याख्या/डॉ॰ संजीव कुमार गोयल 14
उत्तम आहार : शाकाहार/मंजू यादव 16
आपदाएँ और सिकुड़ता पर्यावरण/रश्मि अग्रवाल 17
प्रकृति से रिश्ता बनाएँ/डॉ॰ सुनीति शर्मा 19
कचरा प्रबंधन/डॉ॰ कल्पना चौधरी 22
बच्चों को दें प्रकृति प्रदत्त आहार/महेश चंद शर्मा 24
लीवर : सावधानी है जरूरी 26
ताकि सब्जियाँ रहें सुरक्षित.../डॉ॰ मीनाक्षी यादव 28
शहद के औषधीय गुण/मनिका नितीश 30
प्रकृति हमारी रक्षक/डॉ॰ जयश्री धमाले 31
प्रकृति, पर्यावरण और मानव/रंजना प्रकाश 33
सही खानपान और त्वचा की देखभाल /सुनीता कटारिया 35
आहार से करें उपचार/डॉ॰ अमिता शर्मा 37
करेला : औषधीय गुणों की खान/ डॉ॰ दीपक वर्मा 39
काली मिर्च की उपयोगिता/रचना शर्मा 41
प्रकृति से बढ़ाएँ इम्युनिटी/ डॉ॰ आशीष पाठक 42
इन पटरियों से दूर है स्वच्छता अभियान का सफर/पंकज चतुर्वेदी 44
सिर्फ विलाप से नहीं बचेगी धरती/सुनीता नारायण 46
समुद्र और तटों को प्रदूषित करने की होड़/अंबरीष कुमार 48
मिलकर लड़ना होगा/किरण बेदी 49
बदल सकते हैं हालात/अस्मित के॰ बिस्वास 51
कैसे करें वन प्रबंधन/राजेश जलुथरिया 52
नालों में बदलती नदियाँ/डॉ॰ अनिल जोशी 54
आहार-विवेचन/डॉ॰ विमला जैन 57

कार्यालय
506/13, शास्त्री नगर
मेरठ-250004 (उ॰प्र॰)
दूरभाष : (0121) 2709511
e-mail : prakartimanthan@gmail.com

सदस्यता शुल्क
दो वर्ष : ₹ 500
पाँच वर्ष : ₹ 1000
विदेश में (एक वर्ष) : US$ 50

डॉ० कल्पना चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
आर०जी० डिग्री कॉलेज, मेरठ

कूड़े को लेकर हर देश की समस्या अलग है। कई जगहों पर घर के बाहर कूड़ेदान रखना ही समस्या का कारण बन जाता है। कबाड़ी और स्मैक की लत वाले लोग कूड़ेदान उठाकर ले जाते हैं। कुछ जगहों पर अन्य उपाय अपनाए गए हैं। मसलन, लोग अपना कूड़ा घरों में ही रखते हैं और स्थानीय निकाय की गाड़ी उनसे कूड़ा ले जाती है। इस सेवा के लिए स्थानीय निकाय को उन्हें बाकायदा भुगतान करना होता है और कुछ जगह यह सेवा निजी क्षेत्रों या एनजीओ वगैरह को भी सौंप दी गई है। स्थानीय स्तर पर ऐसे कई समाधान सोचे और निकाले जा रहे हैं। लेकिन फिर भी हमारे शहरों-कस्बों वगैरह को कूड़े से मुक्ति नहीं मिल रही।

कचरा प्रबंधन

ई-कचरे के ढेर से शहरों का दम घुट रहा है। सुविधाभोगी जिंदगी अब इलेक्ट्रॉनिक कबाड़ से घिर गई है। अनेक छोटे शहरों में भी बेंगलुरु और मुम्बई की तरह जहरीला कबाड़ जमा हो चुका है। मोबाइल, टीवी, कम्प्यूटर, लैपटॉप, बैटरी, एसी एवं फ्रिज सरीखे उत्पादों की बाढ़ से कचरा मौत का कारण बन रहा है। ई-कचरा जलाने से उत्पन्न होने वाले जहरीले रसायन कैंसर तक बना सकते हैं। पॉलीथिन से जहाँ नालियाँ एवं सड़कें जाम हैं, वहीं अस्पतालों का कैंसर बायोमेडिकल कचरे से भरा है। 16 लाख की आबादी वाले शहर एवं 35 लाख आबादी वाले जिले में रोजाना सैकड़ों टन ई-कचरा निकल रहा है। टीवी, लैपटॉप, फ्रिज, वाशिंग मशीन, मोबाइल, माइक्रोचिप, रेडियो, ट्रॉजिस्टर, बैटरी एवं अन्य कबाड़ जीवन के लिए खतरा बन चुके हैं। इनमें से तमाम रसायनों में भारी तत्व पाए जाते हैं जो कैंसरकारक भी हैं। इन्हें जलाने पर खतरनाक गैसों का उत्सर्जन होता है। अगर इस कबाड़ को जमीन में गाड़ दिया जाए तो भूजल तक विषाक्त हो सकता है। यह जरूर है कि कबाड़ियों को कौड़ियों के भाव इसे बेच दिया जाता है, जिनके पास निस्तारण का कोई सुरक्षित फार्मूला नहीं होता।

एसोचैम की ताजा रिपोर्ट में बताया गया है कि कचरे में कम्प्यूटर की 68 फीसदी, टेलीकाम उपकरणों की 12, इलक्ट्रॉनिक उपकरणों की 8, चिकित्सा उपकरणों की 7 फीसदी हिस्सेदारी है। इस तरह के ई-कचरे से अभी तक दिल्ली, मुम्बई, बेंगलुरु जैसे बड़े महानगर प्रभावित होते थे, लेकिन अब ई-कचरे का प्रभाव मेरठ, गाजियाबाद, आगरा मथुरा, बनारस व इलाहाबाद जैसे शहरों में भी पड़ने लगा है।

यूज एंड थ्रो से खतरा

इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों को लेकर यूज एंड थ्रो जैसी सोच से स्थिति और भयावह हो गई है। रोजाना सैकड़ों कुंतल नया कबाड़ बन रहा है। मेरठ के तमाम हिस्सों में कबाड़ को जलाकर उसमें से धातुओं को निकालने का खतरनाक काम किया जाता है। रिसाइकलिंग की तकनीक बड़े शहरों में भी न होने से इसका विषाक्त प्रभाव आसपास में भी पड़ता है। रासायनिक चिकित्सक कहते हैं कि ई-कचरा आने वाले एक दशक का सबसे बड़ा खतरा है। डिपार्टमेंट ऑफ एनवायरमेंट फूड एंड रूरल अफेयर्स के आँकड़ों पर गौर करें तो अपने यहाँ ई-कचरे का बोझ आयातित है। हर साल भारत में 12 टन ई-कचरा आ रहा है। यूएसए अपना 80 फीसदी ई-कचरा चीन, इंडोनेशिया व पाक के अलावा भारत में भेज रहा है।

कूड़े से मुक्ति का रास्ता

साप्ताहिक पत्रिका स्पेक्टेटर के अनुसार, इंग्लैंड की सड़कों से तीन करोड़ टन कूड़ा प्रतिवर्ष उठाया जाता है। और सरकार द्वारा चलाए जाने वाले सफाई अभियानों के बावजूद यह बढ़ता जा रहा है। अप्रैल में महारानी एलिजाबेथ की 90वर्षगाँठ के अवसर पर पूरे देश में सफाई अभियान चलाया गया था, पर इससे भी कोई ज्यादा सफाई नहीं हो सकी।

लोगों द्वारा फैलाए जा रहे कूड़े को कैसे रोका जाए? यह समूची दुनिया की समस्या है। इसका एक तरीका सिंगापुर में निकाला गया है। वहाँ कूड़े फैलाने वालों के लिए भारी जुर्माना व जेल का प्रावधान है। च्यूंगम जैसे कूड़े का कारण बनने वाली चीजें

2017-18

शोध पत्रिका
प्रकृति मंथन
अक्टूबर-दिसंबर 2017
केंद्रीय हिंदी निदेशालय (भारत सरकार) द्वारा अनुमोदित
ISSN : 2394-644X
स्वच्छता में महिलाओं का योगदान
स्वच्छता बढ़ते कदम और बाधाएँ
- डॉ. मुकेश कुमार यादव
With YOGA & NATUROPATHY DIRECTORY
प्रकृति प्रहरी
'महात्मा गांधी ने कभी स्वच्छता से समझौता नहीं किया। उन्होंने हमें आज़ादी दिलाई। हमें स्वच्छ भारत के उनके सपने को साकार करना चाहिए।'
-नरेन्द्र मोदी
स्वच्छता विशेषांक
संपादक
मुकेश नादान
NOW! ONLINE SUBSCRIPTION
www.emartubookstore.com

त्रैमासिक
प्रकृति मंथन
...ताकि धरती रहे सुरक्षित।
पर्यावरण और स्वास्थ्य की संवाहक
वर्ष 5 : अंक 4
अक्टूबर-दिसंबर 2017
₹ 50

कहाँ क्या है?

संपादकीय 4
पर्यावरण के स्वभाव को समझें/पद्मश्री अनिल जोशी 6
पाचन-तंत्र को रखें स्वस्थ/सुनीता कटारिया 8
खतरनाक है सॉफ्ट ड्रिंक की लत/डॉ० विकास शर्मा 10
शरीर को रखें स्वच्छ और स्वस्थ/डॉ० साधना मित्तल 12
पीठ दर्द : कारण और निवारण/डॉ० विनय संधु 16
अधिक पसीना : गंभीर बीमारियों का संकेत/मनिका भारद्वाज 18
औषधीय पौधा : हरसिंगार/डॉ० दीपक वर्मा 20
स्वच्छता में महिलाओं का योगदान/रश्मि अग्रवाल 22
स्वच्छता की ओर चलें/डॉ० सुनीति शर्मा 24
प्रकृति और मनुष्य/ राजकुमारी शर्मा 26
जरूरी है साफ-सफाई/डॉ० स्वर्णलता कदम 27
स्वास्थ्य का दुश्मन : जंक फूड/जयवीर सिंह यादव 29
हवाओं में घुलता जहर/डॉ० मीनाक्षी यादव 31
स्वच्छता : बढ़ते कदम और बाधाएँ/डॉ० मुकेश कुमार यादव 33
जल प्रदूषण के दुष्प्रभाव/डॉ० अमिता शर्मा 35
संक्रमण से बचाती है स्वच्छता/डॉ० शशि बाला 37
प्रकृति के संवाहक : गाँव और किसान/रजनी सिंह 38
प्रकृति के सच्चे प्रहरी/डॉ० संजीव गुप्ता 40
स्वच्छ भारत अभियान/महेश चंद शर्मा 42
फूड पॉइजनिंग : स्वच्छता का रखें ध्यान/डॉ० अंजली दत्त 43
प्रकृति प्रहरी : डॉ० संजीव कुमार गोयल/कनिका वर्मा 45
जहरीली होती हवा/डॉ० ईश्वर सिंह 46
...तब सिर्फ किताबों में मिला करेगी गौरेया/ज्ञानेंद्र रावत 48
उद्योग से बड़ी है सेहत की चिंता/सुनीता नारायण 49
आओ! करें स्वच्छता की पहल/डॉ० कल्पना चौधरी 51
एनवायरमेंटल प्लानर्स/अरुणा दलाल 53
अवसाद : कारण और निवारण/डॉ० प्रियंका शर्मा 54
आलेख प्रतियोगिता 56
दूध पिएँ : जरा संभलकर/एम०के० अग्निहोत्री 57

कार्यालय
506/13, शास्त्री नगर
मेरठ-250004 (उ०प्र०)
दूरभाष : (0121) 2709511
e-mail : prakartimanthan@gmail.com

सदस्यता शुल्क
दो वर्ष : ₹ 500
पाँच वर्ष : ₹ 1000
आजीवन : ₹ 5000
विदेश में (एक वर्ष) : US$ 50

ISSN : 2394-644X

डॉ० कल्पना चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
आर०जी० डिग्री कॉलेज, मेरठ (उ०प्र०)

आओ! करें स्वच्छता की पहल

स्वच्छता का संबंध खान-पान और वेश-भूषा से भी है। रसोई की वस्तुओं तथा खाने-पीने की वस्तुओं में स्वच्छता का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है। बाजार से लाए गए अनाज, फल और सब्जियों को अच्छी तरह धोकर प्रयोग में लाना चाहिए। पीने के पानी को साफ बरतन में तथा ढककर रखना चाहिए। कपड़ों की सफाई का भी पूरा महत्व है। स्वच्छ कपड़े कीटाणु से रहित होते हैं जबकि गंदे कपड़े बीमारी और दुर्गंध फैलाते हैं। गंदे परिवेश में रोगाणु जाते और फैल जाते हैं जिन्हें हम हमारी नग्न आँखों से नहीं देख सकते हैं और कितनी तेजी से रोगाणुओं की संख्या बढ़ती है इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।

स्वच्छता अपनाने से व्यक्ति रोग मुक्त रहता है और एक स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। अतः हर व्यक्ति को जीवन में स्वच्छता अपनानी चाहिए और अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।

कदम से कदम मिलाना है,
स्वच्छता का पाठ पढ़ाना है।
सबको कर्तव्य निभाना है,
भारत को स्वर्ग बनाना है।

विशेषतः गर्मियों में उमस और तापमान में बढ़ोतरी होने के कारण संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। यही वह समय है, जब हैजा, पीलिया, पेट दर्द, डीहाइड्रेशन और फूड पाइजनिंग के मामले बढ़ जाते हैं। मेनेंजाइटिस, चेचक, हेपेटाइटिस-ए के मामलों में भी इस मौसम में बढ़ोतरी देखने को मिलती है। हाइजिन केवल शरीर की साफ-सफाई नहीं है, घर और अपने आसपास को भी साफ-सुथरा रखना जरूरी होता है।

हाथ रहें साफ

सबसे अधिक संक्रमण गंदे हाथों से फैलता है। सर्दी-जुकाम से लेकर इन्फ्लूएंजा, हेपेटाइटिस ए, मेनेंजाइटिस, ब्रोंकाइटिस, फ्लू और अन्य संक्रमण इसी की वजह से शरीर में प्रवेश करते हैं। ग्लोबल हाइजीन काउंसिल के अनुसार एक दिन में कम से कम छह बार हाथ धोने चाहिए। केवल शौच के बाद ही साबुन से हाथ न धोएँ हाथ सही से धोएँ।

हाथ कब धोएँ

खाना पकाने से पहले व बाद में।
घर की सफाई और शौच के बाद।
नाक-साफ करने, खाँसने या छींकने के बाद।
बच्चों के नैपकिन बदलने के बाद।
कच्चे माँस को छूने के बाद।

जानवरों को छूने के बाद, जिसमें पालतू जानवर भी शामिल हैं। बीमार सदस्य से मिलने जाने या देखभाल करने से पहले और बाद में।

खान-पान की सफाई

उमस व तापमान में बढ़ोतरी के कारण गर्मियों में भोजन जल्दी खराब व संक्रमित होता है। संक्रमित भोजन हमारे खून, किडनी और तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है।

इनका रखें ध्यान

- बर्तनों और बाकी वस्तुओं को धोकर खाना खाएँ।
- बचे खाने को ज्यादा समय तक रेफ्रिजरेटर से बाहर न रखें। दोबारा सेवन करने से पहले ठीक से गर्म कर लें।
- एक्सपायरी डेट के बाद चीजों को ना खाएँ।
- उबला हुआ या फिल्टर किया हुआ पानी ही पिएँ।
- माँस के लिए अलग कटिंग बोर्ड का इस्तेमाल करें।

रसोई की सेहत

ग्लोबल हाइजीन काउंसिल के सर्वे के अनुसार खाना बनाने के दौरान जिन सतहों को हम छूते हैं, उनमें से 40 प्रतिशत बैक्टीरिया द्वारा प्रदूषित होती हैं।

ध्यान रखें : जूठे बर्तनों को दो घंटे से अधिक न रखें, इससे रोगाणु पनप सकते हैं। किचन में लिक्विड हैंडवाश का इस्तेमाल करें। रेफ्रिजरेटर और सिंक की नियमित सफाई करें।

रसोई को जहाँ तक हो, सूखा व साफ रखें। बर्तन पोंछने और किचन में हाथ पोंछने वाले तौलिए को रोज गरम पानी से धोएं। कूड़े को स्लैब पर न रखें, डस्टबिन में डालें। रात को रसोई व उसका फर्श अवश्य साफ रखें, चूहे, कॉकरोच और रोगाणु आदि जमा नहीं होंगे।

प्रकृति प्रहरी
रजनी सिंह

प्रकृति मंथन

...ताकि धरती रहे सुरक्षित।

वर्ष 6 : अंक 1 जनवरी-मार्च 2018 ₹ 50

कहाँ क्या है?

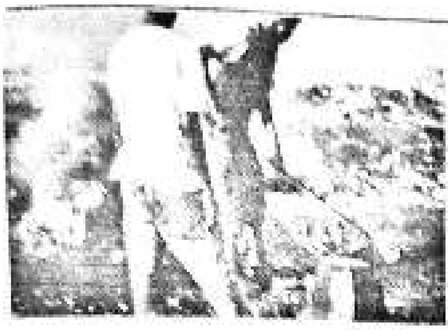

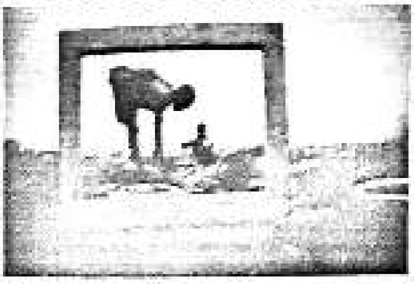

संपादक की कलम से 4
इलेक्ट्रॉनिक कचरे का डंपिंग ग्राउंड/डॉ० कल्पना चौधरी 5
ई-कचरा : पर्यावरण प्रदूषण का नया आयाम/डॉ० अनामिका त्रिपाठी 7
कम्पोस्ट खाद : एक नई सोच/डॉ. स्वर्णलता कदम 9
ई-कचरा प्रबंधन कैसे करें?/डॉ० मुकेश कुमार यादव 11
भारत में बढ़ता खतरा : ई-कचरा/मुकेश नादान 13
स्वास्थ्य के लिए खतरा : ई-कचरा/प्रो० विकास शर्मा 15
हवा का बदलता रुख/पद्मश्री अनिल जोशी 17
पर्यावरण प्रतियोगिताएँ और सेमिनार/प्रमेश्वर दयाल 19
आवश्यक है पर्यावरण शिक्षा/जयवीर सिंह यादव 21
जल प्रदूषण : कारण और निवारण/मिथलेश कुमार 23
क्या कहते हैं शरीर के संकेत/डॉ० सुनीति शर्मा 25
इलेक्ट्रॉनिक कचरा : बीमारियों का खतरा/डॉ० प्रियंका शर्मा 27
मानसिक विकास के लिए घातक : ई-कचरा/डॉ० मीनाक्षी यादव 29
चमत्कारी पौधा : अश्वगंधा/डॉ० दीपक वर्मा 31
त्योहारों पर रखें सेहत का ध्यान/डॉ० सुनीता कटारिया 34
आँखें हैं अनमोल/डॉ० संजीव गुप्ता 36
चमत्कारी होता है प्राकृतिक भोजन/डॉ० संजीव कुमार गोयल 38
जल : प्रदूषण एवं प्रबंधन/डॉ० शालिनी राय/नीलम कुमारी 40
गुणकारी बेल/राजकुमारी शर्मा 42
व्यक्तिगत प्रयासों से दूर होगा जल प्रदूषण/डॉ० बरखा मित्तल 44
कचरा प्रबंधन का महत्व/डॉ० शशि बाला 45
करियर : धरती के जानकार/मनिका भारद्वाज 48
कहीं सांस न घोट दे ये प्रदूषण/डॉ० अमिता शर्मा 49
एक शहर जिसने कचरे के खिलाफ मुहिम छेड़ दी/पंकज चतुर्वेदी 51
प्रकृति प्रहरी : रजनी सिंह 52
जल संकट : जिम्मेदारी किसकी?/कैप्टन चंद्रपाल सिंह यादव 53
गुणकारी लौंग/डॉ० साधना मित्तल 55
अपशिष्ट प्रबंधन : समस्या और समाधान/रश्मि अग्रवाल 56
हँसने से रोगों का उपचार/निरुपमा 58
प्राकृतिक उपचार से घटाएँ मोटापा 60
गाँधी जी और प्राकृतिक चिकित्सा/ममता नौगरैया 61

कार्यालय
506/13, शास्त्री नगर
मेरठ-250004 (उ०प्र०)
दूरभाष : (0121) 2709511
e-mail : prakartimanthan@gmail.com

सदस्यता शुल्क
दो वर्ष : ₹ 400
पाँच वर्ष : ₹ 1000
आजीवन : ₹ 5000
डाक व्यय अतिरिक्त

ISSN : 2394-644X

डॉ० कल्पना चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
आर०जी० डिग्री कॉलेज, मेरठ (उ०प्र०)

निसंदेह पूरी दुनिया का ध्यान विकास की ओर है। विज्ञान की तरक्की ने हमें जो साधन और सुविधाएँ मुहैया कराई हैं, उनसे हमारा जीवन पहले के मुकाबले आसान भी हुआ है। कम्प्यूटर और मोबाइल फोन जैसी चीजों ने हमारा कामकाज काफी सुविधाजनक बना दिया है। इसकी लिस्ट काफी लम्बी है और फैक्स मशीन, फोटो कॉपी, डिजिटल कैमरे, लैपटॉप, प्रिंटर, इलेक्ट्रॉनिक खिलौने व उपकरण एयर कंडीशनर, माइक्रोवेव, कुकर, थर्मामीटर आदि चीजों ने हमें चारों तरफ से घेर लिया है। दुविधा यह है कि आधुनिक विज्ञान की देन पर सवार हमारा समाज जब इन उपकरणों के पुराने या बेकार होने पर भी उनसे पीछा छुड़ाने की कोशिश करेगा, तो ई-वेस्ट की विकराल समस्या से कैसे निपटा जाएगा।

इलेक्ट्रॉनिक कचरे का डंपिंग ग्राउंड

आज भारत और चीन में मोबाइल फोन की संख्या वहाँ की आबादी को पीछे छोड़ चुकी है। कारण सस्ते मोबाइल फोनों की उपलब्धता। इलेक्ट्रॉनिक बाजारों ने फोनों को इतना सस्ता और सुलभ बना दिया है कि एक व्यक्ति दो-दो फोन रखने से भी नहीं कतराता। लेकिन गंभीर बात यह है कि इससे इलेक्ट्रॉनिक क्रांति में छुपे हो खतरे उत्पन्न होने लगे हैं। जो आने वाली पीढ़ी को भयानक हानि पहुँचा सकते हैं। फिलहाल भारत में एक अरब से ज्यादा मोबाइल ग्राहक हैं। मोबाइल सेवाएँ शुरु होने के 20 साल बाद भारत ने यह आंकड़ा इसी साल जनवरी में पार किया है। दुनिया में फिलहाल चीन और भारत ही दो ऐसे देश हैं, जहाँ एक अरब से ज्यादा लोग मोबाइल फोन से जुड़े हैं। देश में मोबाइल फोन इंडस्ट्री को अपने पहले 10 लाख ग्राहक जुटाने में करीब 5 साल लग गए थे, पर अब भारत-चीन जैसे आबादी बहुल देशों की बदौलत पूरी दुनिया में मोबाइल फोन की संख्या इंसानी आबादी के आँकड़े यानी 7 अरब को पीछे छोड़ चुकी है। ये आँकड़े बताते हैं कि अब गरीब देशों के नागरिक भी जिंदगी में बेहद जरूरी बन गई संचार सेवाओं का लाभ उठाने की स्थिति में हैं। वहीं यह इलेक्ट्रॉनिक क्रांति दुनिया को एक ऐसे खतरे की तरफ ले जा रही है, जिस पर अभी ज्यादा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यह खतरा है इलेक्ट्रॉनिक कचरा यानी ई-वेस्ट का।

सालाना 8 लाख टन कचरा

आईटीयू के मुताबिक भारत, रूस, ब्राजील समेत करीब देश ऐसे हैं, जहाँ मानव आबादी के मुकाबले मोबाइल फोनों की संख्या ज्यादा है, रूस में 25 करोड़ से ज्यादा मोबाइल हैं, जो वहाँ की आबादी से 1.8 गुना ज्यादा है। ब्राजील में 24 करोड़ मोबाइल हैं, जो आबादी से 1.2 गुना ज्यादा हैं। इसी तरह मोबाइल फोन धारकों के मामले में अमेरिका और रूस को पीछे छोड़ चुके भारत में भी यही स्थिति बन गई है कि यहाँ करीब आधी आबादी के पास मोबाइल फोन हैं। भारत की विशाल आबादी और फिर बाजार में सस्ते मोबाइल हैंड सेट उपलब्ध होने की सूचनाओं के आधार पर इस दावे में कोई संदेह भी नहीं लगता। पर यह तरक्की हमें इतिहास के एक ऐसे मोड़ पर ले आई है, जहाँ हमें पक्के तौर पर मालूम नहीं है कि आगे कितना खतरा है? हालांकि इस बारे में थोड़े-बहुत आकलन अनुमान अवश्य हैं, जिनसे समस्या का आभास होता है। जैसे, वर्ष 2013 में इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल एजुकेशन एंड रिसर्च (आईटीईआर) द्वारा इलेक्ट्रॉनिक कचरे (ई-वेस्ट) का प्रबंधन और साज-संभाल विषय पर आयोजित सेमीनार में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के विज्ञानियों ने एक आकलन करके बताया था कि भारत हर साल 8 लाख टन इलेक्ट्रॉनिक कचरा पैदा कर रहा है। इस कचरे में देश के 65 शहरों का योगदान है पर सबसे ज्यादा ई-वेस्ट देश की वाणिज्यिक राजधानी मुम्बई में पैदा हो रहा है। हम अभी यह कहकर संतोष जता सकते हैं कि हमारा पड़ोसी मुल्क चीन इस मामले में हमसे मीलों आगे है।

पश्चिमी देश का कबाड़

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक चीन दुनिया का सबसे बड़ा ई-वेस्ट डंपिंग ग्राउंड है। उल्लेखनीय है कि जब जो टीवी, फ्रिज, एयर कंडीशनर, मोबाइल फोन, कम्प्यूटर आदि चीन में बनाकर पूरी दुनिया में सप्लाई किए जाते हैं, कुछ वर्षों बाद चलन से बाहर हो जाने और कबाड़ में तब्दील हो जाने के बाद वे सारे उपकरण चीन या भारत लौट आते हैं। निसंदेह पूरी दुनिया का ध्यान विकास की ओर है। विज्ञान की तरक्की ने हमें जो साधन

RECENT DEVELOPMENT IN SCIENCE AND TECHNOLOGY

EDITORS
DR. NEELAM KUMARI
DR. ARCHANA

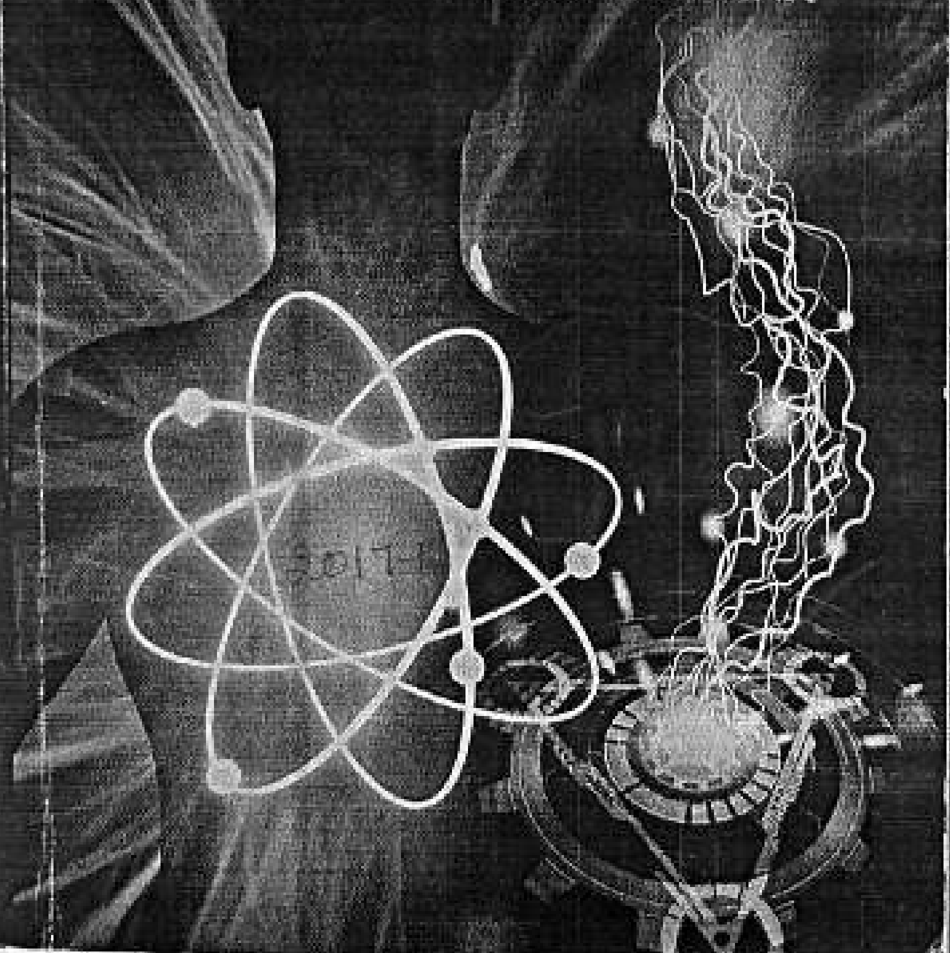

CONTENTS

1. Biomolecules in Confined Spaces — 1
   [illegible] Malik, Vipul Taxak, Arjun Malik, Rajesh Malik

2. Design, Synthesis and Biological Evaluation of Newer Indolyl Thiadiazoles and Their Thiazolidinones and Formazans as Anticonvulsant Agents — 13
   Archana

3. Assessment of Point and Non-point Sources of Krishna River Pollution Using a Chemical Mass Balance Approach — 25
   Neelam Kumari

4. Recent Developments in Science and Technology — 39
   Vinod Kumar

5. Impact of Human Activities on Global Warming and Climate Change — 45
   [illegible] Tomar, Megha Chaudhary, Rajiv Kumar

6. GC-MS : A Powerful Tool to Scientists — 52
   Uma Prabha Sharma and Manisha Singhal

CHAPTER 6

GC-MS : A Powerful Tool to Scientists

Vinay Prabha Sharma and Manisha Singhal***

Abstract

GC and MS are useful tools for chemical analysis, especially when used together. This paper provides basics of Gas Chromatograpy & Mass Spectrometery separately & insight into applications and working methodology of GC- MS as a combination. It is a very useful for quality control, analytical research, impurity profiling and maintenance for human welfare and development.

Key words: Gas Chromatography, Mass Spectrometery, etc

Introduction

Gas chromatography ("GC") and mass spectrometry ("MS") make an powerful combination for chemical analysis.Gas chromatography–mass spectrometry (GC-MS) is a hybrid

* Vinay Prabha Sharma, Chemistry Department, Meerut College, Meerut.

** Manisha Singhal, Chemistry Department, RG College, Meerut.

Dr. Neelam Kumari is an Assistant Professor in the Department of Chemistry, Meerut College, Meerut. She has completed her Ph.D. Degree from CCS University, Meerut. She has so far successfully conducted 5 national seminar as Co-convener and co-ordinator. She is life time member of Indian Science Congress and member of various reputed research centre. Her research expertise includes Bio-chemistry. She has contributed chapter in various edited book and seminar proceeding and also authored open universities study material. She has published 14 research papers in reputed research journals. She has participated and presented paper in national and international seminar. She wrote recently two books on field on Nuclear Chemistry and Bio inorganic which are under process of publication.

Dr. Archana is Assistant Professor in he Department of Chemistry, Meerut College, Meerut. Pior to this she was awarded senior research fellowship from CSIR, New Delhi. She did here doctorate from LLRM, Medical College, Meerut and played a major role in the synthesis of newer heterocyclic compounds as anticonvulsant agents. She has published 12 research papers in journals of international and 7 research papers in journals of national repute. She has 16 years of research experience and 8 years of teaching experience (both at UG and PG level).

SUNRISE PUBLICATIONS
A-120 Sector 4, Lajpat nagar
Sahibabad, Ghaziabad - 201005
Ph. : 9910047468
E-mail : sunrisepublications26@gmail.com

ISBN 978-93-80966-84-7
9 789380 966847
₹ 500

Transformation of Higher Education in India

Dr. Anshu Ujjwal

Published By :

ANU BOOKS

ANU BOOKS

SHIVAJI ROAD, NEAR PETROL PUMP, MEERUT

E-mail : jouranal@anubooks.com
anubooksmeerut@hotmail.com

Website : www.anubooks.com

Phone : 0121-2657362

Mob. : 91-9997847837

ISBN 978-93-82-166-46-7

9 789382 166467

[redacted]

2016-17

22- Quality Assurance in Higher Education	220
Dr. Devendra Kumar Pandey	
Dr. Anil Vashisht	
23- Use of Technology for the Conservation of Natural Resources for Sustainable Development	238
Ritambhara Goswami	
Dr. Anil Vashisht	
24- Intervention of Information and Communication Technology for Quality Assurance in Higher Education : Prospects and Opportunities	248
Dr. Deeksha Yajurvedi	
25- Information and Communication Technology and Teaching Learning Process	259
Ms. Shuchi Prakash Goel	
26- Monitoring and Evaluation of Information Technology on English as a Second Language (ESL)	264
Farheen Javed	
27- Role of Information and Communication Technology in Higher Education in the Present Scenario	272
Sachin Kumar	
Dr. Sakshi Chaudhary	
28- Effect of Information & Communication Technology on Educational Structure	278
Ms. Archana Kumari	
29- Quality Assurance in Higher Education in India	290
Dr. Sandeep Kumar	
30- Role of ICT in Continuous Development of Higher Education in India	299
Dr. Sonam Sharma	

Intervention of Information and Communication Technology for Quality Assurance in Higher Education : Prospects and Opportunities

Dr. Deeksha Yajurvedi*

Absrtact

Higher education plays a pivotal role in the development of a country as it is viewed as a powerful means to build knowledge driven society and economy. Quality education assurance in any educational system stands on the firm pillars of faculty, infrastructure and curricula. Quality education aims at enhancing cognitive achievement preparing the students to become responsible citizen and also accommodates the modern market oriented skills. To provide such quality assurance, a dynamic equilibrium is to be maintained which bring education and skills at an uplifted standard to meet global needs and challenges. In the overall context of goals of higher education, the institutions should develop institutional goals of ICT application. Keeping in mind the four pillars of higher education sometimes referred as four E's viz expansion, equity, excellence and employability, the intervention of ICT is very beneficial for quality assurance. ICT is an umbrella term usually used to include any communication device or application encompassing all types of media like radio, television, cellular phones, computer, internet, and associated applications like videoconferencing and distance learning.

*Asstt. Prof., Deptt.of Chemistry, R.G. PG College, Meerut

RECENT DEVELOPMENT IN SCIENCE AND TECHNOLOGY

EDITORS

DR. NEELAM KUMARI

DR. ARCHANA

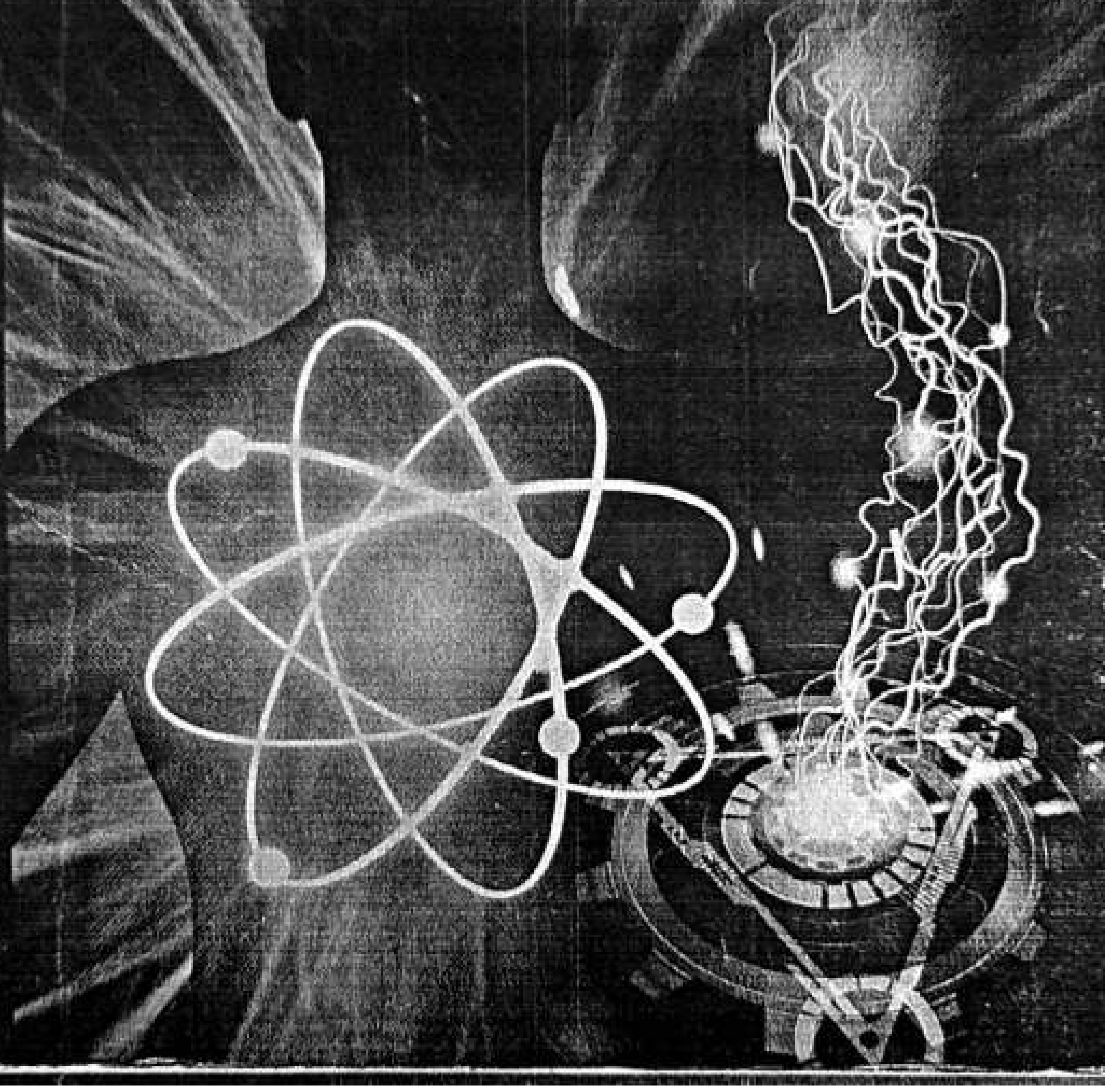

Dr. Neelam Kumari is an Assistant Professor in the Department of Chemistry, Meerut College, Meerut. She has completed her Ph.D. Degree from CCS University, Meerut. She has so far successfully conducted 5 national seminar as Co-convener and co-ordinator. She is life time member of Indian Science Congress and member of various reputed research centre. Her research expertise includes Bio-chemistry. She has contributed chapter in various edited book and seminar proceeding and also authored open universities study material. She has published 14 research papers in reputed research journals. She has participated and presented paper in national and international seminar. She wrote recently two books on field on Nuclear Chemistry and Bio inorganic which are under process of publication.

Dr. Archana is Assistant Professor in he Department of Chemistry, Meerut College, Meerut. Pior to this she was awarded senior research fellowship from CSIR, New Delhi. She did here doctorate from LLRM, Medical College, Meerut and played a major role in the synthesis of newer heterocyclic compounds as anticonvulsant agents. She has published 12 research papers in journals of international and 7 research papers in journals of national repute. She has 16 years of research experience and 8 years of teaching experience (both at UG and PG level).

SUNRISE PUBLICATIONS

A-120 Sector 4, Lajpat nagar
Sahibabad, Ghaziabad - 201005
Ph. : 9910047468
E-mail : sunrisepublications26@gmail.com

ISBN 978-93-80966-84-7

9 789380 966847

₹ 500

2016-17

17. Synthesis and Characterization of 2,5-Dihydroxy Substituted Chalcones 153
Neelam Kumari, Pratibha

18. Synthesis and Anticonvulsant Activity of Various Triazolylthiadiazolylazetidinonyl/ Thiazolidinonyl indoles 162
Hemlata Kaur, Sunil Kumar and Yashowardhana

19. Potential Applications of Fullerenes in Science and Technology 179
Deeksha Yajurvedi

20. Synthesis and Spectral Studies of Complexing Behaviour of Isothiocaynato Complexes of 4 [N (Benzophenone) Amino] Antipyrine – C24H21N3O 190
Sakshi Chaudhary

21. Biobased Packaging Materials for the Food Industry 199
Anita sharma

22. Stevia rebaudiana: The sweet plant 210
Sanjay Vats

23. The Biometrical Approach to Workout Genetic Diversity and Stability in the Plant Genotypes 214
Pradeep Chaudhary

24. Biochemical Changes Occurring During Germination of Oily Seeds 223
Anshu Dhaka

25. Development of Bio-degradable Plastics from Renewable Sources : A Review 235
Rajeev Rathore

26. Soil Pollution: Chemical Remediation Methods 249
Rajesh Malik

CHAPTER 19

POTENTIAL APPLICATIONS OF FULLERENES IN SCIENCE AND TECHNOLOGY

*Deeksha Yajurvedi**

Abstract

Advancement in the field of science and technology is undoubtedly remarkable in the 21st century. The discovery of these wonder carbon-spheres has brought about a revolution in the field of medical application, and has led to the new concept leading to truly un-conventional mode of therapeutics, using fullerenes as medical adjuvant with nearly negligible side effects. Many of the practical applications of fullerenes follow directly from their extraordinary properties. Relevant chemical, physical and the optical properties are assessed, which makes the Fullerenes as an essential component for the future of the nanoelectromechanical system. In many cases, the necessity of building novel organic compounds leads to the exploration of nanostructures, like fullerenes. These

* Deeksha Yajurvedi, Chemistry Department, R.G. College, Meerut.

2017-18

प्रतिभूति विश्लेषण एवम् प्रतिभूति-समूह प्रबन्धन

Security Analysis & Portfolio Management

डॉ० पारुल रस्तोगी

डॉ० अंजली गोयल

के० जी० पब्लिकेशन्स

प्रतिभूति विश्लेषण एवम् प्रतिभूति-समूह प्रबन्धन

Security Analysis and Portfolio Management

(भारतीय विश्वविद्यालयों के एम० कॉम० के विद्यार्थियों के लिये)

लेखक

डॉ० पारुल रस्तौगी
एम० कॉम०, यूपी स्लैट, पीएच० डी०
वाणिज्य विभाग
आर० जी० (पी० जी०) कॉलेज, मेरठ

डॉ० अंजली गोयल
एम० कॉम०, पीएच० डी०
वाणिज्य विभाग
आर० जी० (पी० जी०) कॉलेज, मेरठ

के० जी० पब्लिकेशन्स
मोदीनगर

प्रतिभूति विश्लेषण एवम् प्रतिभूति-समूह प्रबन्धन
Security Analysis and Portfolio Management

प्रथम् संस्करण – नवम्बर 2017

मूल्य : ₹ 240.00

© प्रकाशक

ISBN No. 2017 : 978-81-934501-8-5

प्रकाशक :

के० जी० पब्लिकेशन्स

27, सोना एन्कलेव, सीकरी कलाँ,

मोदीनगर – 201204

फोन – 09837686888, 9359686888

लेजर टाइप सैटिंग :

सनबीम कम्प्यूटर्स, मोदीनगर

मुद्रक :

जे० एस० आफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ

English Edition of the Book is also available

Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, errors may creep in. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to our notice which shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss of action to anyone, of any kind, in any manner, therefrom.

No part of this book may be reproduced or copied in any form or by any or reproduced on any disc, tape, perforated media or other information storage device, etc., without the written permission of the publishers. Breach of this condition is liable for legal action.

For binding mistake, misprints or for missing pages, etc., the publisher's liability is limited to replacement within one month of purchase by similar edition. All expenses in this connection are to be borne by the purchaser.

All disputes are subject to Ghaziabad jurisdiction only.

विषय-सूची

	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	विनियोजन Investment	1.1 - 1.12
2.	प्रत्याय एवं जोखिम Return and Risk	2.1 - 2.30
3.	वित्तीय सम्पत्तियाँ Financial Assets	3.1 - 3.50
4.	प्रतिभूति बाजार - प्राथमिक बाजार Security Market – Primary Market	4.1 - 4.22
5.	द्वितीयक बाजार Secondary Market	5.1 - 5.30
6.	निक्षेपागार पद्धति Depository System	6.1 - 6.10
7.	बन्ध-पत्रों का मूल्यांकन Valuation of Bonds	7.1 - 7.16
8.	अंशों का मूल्यांकन Valuation of Shares	8.1 - 8.22
9.	प्रतिभूति-समूह प्रबन्धन Portfolio Management	9.1 - 9.12
10.	प्रतिभूति विश्लेषण - मूलभूत विश्लेषण Security Analysis – Fundamental Analysis	10.1 - 10.10
11.	तकनीकी विश्लेषण Technical Analysis	11.1 - 11.20
12.	स्कन्ध बाजार व्यवहार के सिद्धान्त Theories of Stock Market Behaviour	12.1 - 12.10
13.	प्रतिभूति-समूह चयन Portfolio Selection	13.1 - 13.36
14.	पूँजी बाजार सिद्धान्त - सी०एपी०एम० और ए०टी०पी० प्रतिमान Capital Market Theory – CAPM & ATP Models	14.1 - 14.35
15.	प्रतिभूति-समूह निष्पादन का मूल्यांकन और प्रतिभूति-समूह संशोधन Evaluation of Portfolio Performance and Portfolio Revision	15.1 - 15.13
	Appendix – Present Value Tables	(i) - (ii)
	Compound Value Tables	(iii) - (iv)

SALE!

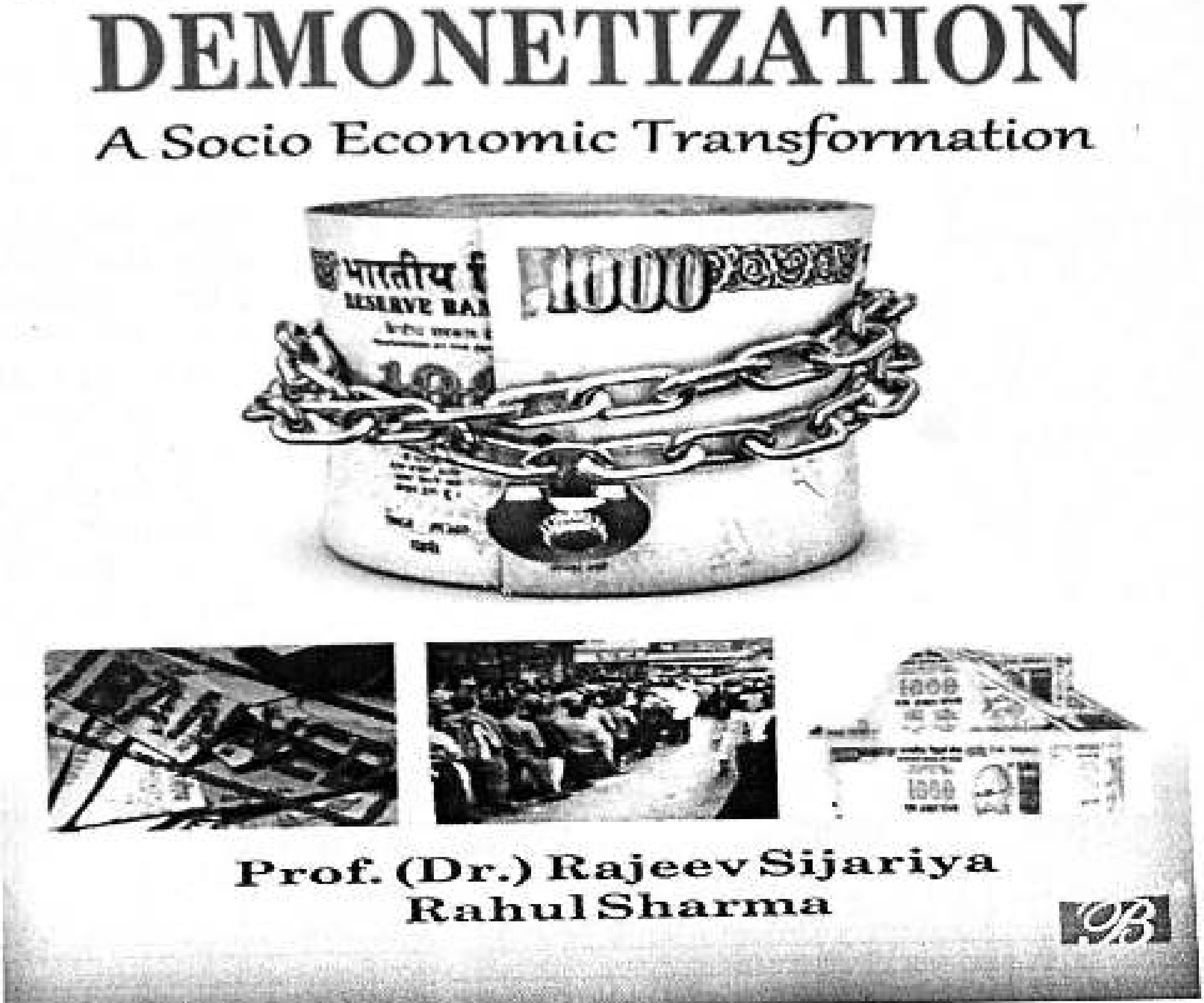

Demonetization : A Socio Economic Transformation

~~₹980.00~~ ₹979.00

Author	Dr Rajeev Sijaria & Rahul Sharma
ISBN	978-93-85000-69-0
Price	Rs. 979/-
Year	2017
Binding	Hard Cover Binding
Size	9.5"x7.25"(Crown)